सुषमा अग्रवाल के उपन्यासों में पश्चिमीकरण से प्रभावित एवं परिवर्तित भारतीय संस्कृति

सईदा मेहराज

कश्मीर विश्वविद्यालय

हजरतबल श्रीनगर

190006

पश्चिमीकरण अर्थात पश्चिम देशों की संस्कृति का अनुसरन करते हुए जीवन की परिपाटियाँ विकसित करना | यह शब्द अंग्रेज़ी के 'Westernization' का हिन्दी अनुवाद है जिसमें हमारे देश के लोग पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति का अनुसरन करते हुए अपनी मूल संस्कृति को विस्मृत करते है | इक्कीसवी सदी में पश्चिमीकरण की इस प्रक्रिया ने हमारे देश की राजनैतिक या आर्थिक व्यवस्था को प्रभावित कर रहा है "वैश्विकरण के बहाने हमारी उदिता संस्कृतिक विविदता की विरास्त को खतम करने की साजिश अमेरिकी साम्राज्यवाद कर रहा है | हमारी भाषाओं, हमारी जीवन पद्धिती और खान-पान पर भी इसका सीदा और बुरा प्रभाव पड़ना शुरू हो चुका है इन प्रभावों के कारण पूरा का पूरा संवेदनशील प्रबुद्ध समाज बेबस और बेचेन है पूरी जीवनशैली का अमेरिकीकरण हो चुका है |"[1]

वर्तमान में हम देख रहे है कि भारत के लोग निरंतर खान-पान, रहन-सहन के तौर-तरीके, वेशभूषा यहाँ तक कि पर्व-त्यौहारों में भी पश्चिम का अनुकरण किए जा रहे है जो भारतीय

संस्कृति की जड़ को खतम करने जैसे है "गलत विकास मानडण्डों के कारण वर्तमान में जीवन-शैली में आए परिवर्तन पर चोट करते हुए काका कालेलकर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'युगानुकूल हिन्दू जीवन दृष्टि' में लिखा था – "भद्रता जो हमारी आतंरिक वस्तु थी उसे हम कपड़ों और जूतों की दुकानों में ले गए, मोटर गाड़ियों और हवाई जहाजों में घूमाने लगे और न जाने कहाँ तक यह पहुंचेगी | आज हमारी भद्रता सस्ते कपड़ों से अपमानित होती है, घर में विलायती दंग की सजावट न हो तो हमारी भद्रता कलंकित होती है | हम भूल बैठे कि ऐसी प्रतिष्ठा को सिर पर ढोकर उसका आदर करना वास्तव में अत्यंत लज्जा का विषय

है |"[2] वह इस कारण क्योंकि आज पश्चिमीकरण भारतीय समाज पर जड़कर चूका है परिणामस्वरूप यहाँ की संस्कृति विलुप्त होती दिखाई दे रही है | आज मनुष्य की मानसिकता पर भी भूमंडलीकरण ने अपने पैर जमा रखे है व्यक्ति न केवल अपने जीवन यापन में अपितु जीवन यापन के छोटे -बडे सभी कार्यों में पश्चिमीकरण को अपना चूका है " इक्कीसवी सदी में भूमंडलीकरण, अमेरिकीकरण की जो आँधी चली उसका दूसरा पक्ष संस्कृति है |"[3]

जो किसी भी प्रकार आर्थिक पक्ष से कमतर नहीं है | इस सांस्कृतिक आक्रमण की आंदी आर्थिक से भी अधिक तीव्र गति से आई जिसने हमारी संस्कृतिक जड़ों को पूरी तरह से

हिला डाला | विलुप्त होती इस भारतीय संस्कृति पर इस समय देश का शासन विशेष ध्यान नहीं दे रहा है | साहित्य समय-समय पर संस्कृति की दशा व दिशा से सभी को अवगत करवाता है हिन्दी साहित्य में सुषमा अग्रवाल जानी मानी लेखिकाओं में से एक है जिन्होंने संस्कृति और समाज को बहुलता प्रदान की है | अपने औपन्यासिक साहित्य में उन्होंने पश्चिम में डलती भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण चित्रण किया है | पश्चिम के रंग में रंगते भारतीय लोग और संस्कृति पर पड़ते उनके नकारात्मक प्रभावों को लेखिका ने दृढ़ता पूर्वक रेखांकित ही नहीं किया है बल्कि उन्हें यथार्थ रूप में भी सामने लाया है | युवा पीढ़ी की बदलती मानसिकता उनके बदलते आचार-विचार और व्यवहार आदि के कारण विलुप्त होते हमारे रीति-रिवाज हमारी परम्पराओं को लेखिका ने अपने उपन्यासों के माध्यम से यथार्थ रूप में चित्रित कर पाठक के सामने लाया है |

हिन्दी साहित्य की लेखिका सच को सामने लाने में रंचमात्र भी भय नहीं करती है | उनका सम्पूर्ण लेखन सत्य की धुरी थामे हुए यथार्थ के पटल पर हमारे समाज के पूरे एक समय को व्यक्त करने की क्षमता रखता है | मूलतः देखा जाए तो उनका **नया रास्ता** उपन्यास में भारतीय संस्कृति की समृद्धता को व्यक्त करते हुए उन्होंने उस पर पड़ते पश्चिमीकरण के प्रभावों का भी महत्वपूर्ण आंकलन अपने उपन्यास में प्रस्तुत किया है | पश्चिमीकरण से प्रभावित होकर व्यक्ति इतना अर्थ केंद्रित हो गया है कि आज उसे उचित अनुचित का

बिलकुल भी बोध नहीं हो पा रहा है | धन उसके मस्तिष्क में घर कर चुका है | आज व्यक्ति अपने संस्कारों और परोपकारों से परे जाकर पश्चिम के चाल चलन पर उतर कर केवल पैसे को महत्व दे रहा है | आलोचय उपन्यास में अमित के माता-पिता भी केवल पैसों की लालच में आकर सरिता के रिश्ते के लिए स्वीकृति दे देते है और धनिमल भी केवल पैसे के बल पर अपनी बेटी सरिता का रिश्ता करवाने में सफल हो जाता है | अमित और उसके पिता इस पक्ष में तो नहीं थे किंतु अमित की माता पूँजीवादी मानसिकता को अधिक महत्व देती है | अमित की माता भारतीय संस्कृति (मीनू) को छोड़ पूंजीवादी पश्चिमी संस्कृति (सरिता) को अपनाने के लिए तैयार होती है | "क्या जरूरत है कि बहू घर में आकर काम करे और फिर सरिता बड़े घर की लड़की है | उसे काम करना कहाँ आता होगा | घर में नौकर ही काम करते होंगे |"[5] दूसरी ओर धनीमल भी कुछ-कुछ पश्चिमी रंगों में डलते नजर आते है जब वह शादी पक्की हो जाने के पश्चात अपने भावों को व्यक्त करते हुए अपनी बेटी और दामाद को अलग घर देने की बात करते है जिसमें अमित अपने माता-पिता को छोड़ केवल अपनी बीबी अर्थात धनीमल की बेटी सरीता के साथ ही रहे | "पर, भाई साहब ! आज कल के बच्चे तो अलग रहकर ही अपनी गृहस्थी बसाना चाहते हैं |"[6] इससे स्पष्ट हो जाता है कि धनीमल अदिकाधिक पश्चिमीकरण का पुजारी है जो अपनी मूल संस्कृति माता-पिता को त्याग देने की सोच रखता हुआ पश्चिमीकरण में पूर्णरूप से डूबा हुआ है |

साथ ही साथ अपने बच्चों को भी वह इसी मानसिकता का आदि बनाकर उन्हें इसी पथ पर चलाने या जीवन जीने का पक्षधर है |

पश्चिम की पूंजीवादी समाज व्यवस्था एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ पैसा ही सर्वोपरी होता है पैसे के समक्ष मनुष्य की संवेदनाएं और भावनाएं शून्य समझती जाती है | नया रास्ता उपन्यास में अमित की माता और धनीमल जैसे लोग पूंजीवादी व्यवस्था के रंगों में रंगे हुए लोग होते है एक ऐसी व्यवस्था जिसके "अंतर्गत पैसा ही प्रमुख हो जाता है | कोई व्यक्ति क्या है और क्या कर सकता है | यह बात उसके अपने व्यक्तित्व के आधार पर निश्चित नहीं होती वरन पैसे के आधार पर निश्चित होती है | पैसे की शक्ति व शमता उस मनुष्य की शक्ति व शमता बन जाती है |"[7] पैसे की यह एक ऐसी व्यवस्था है जो समस्त मानवीय सम्बंधों को तोड़ कर रख देती है | लेखिका ने पश्चिमीकरण के इन बिंदुओं के कारणों और परिणामों को सामने लाते है जो आज के समय में सार्थक सिद्ध हो रहा है |

यह सच है कि पश्चिमीकरण कुछ हद तक हमारे देश के लिए सकारात्मक भी सिद्ध हुआ है | अपितु कही जगहों पर उसके परिणाम नकारात्मक भी दृष्टिगोचर होते है | जो आज भी भारतीय संस्कृति के लिए कहीं से भी हितकर सिद्ध नहीं होते | यहाँ माता-पिता अपने बच्चों को सदैव अच्छी व उच्च शिक्षा देना चाहते है जिसके लिए वह जीवन की विपरीत परिस्थितियों का सामना करने में रंचमात्र भी नहीं घबराते आज का युवा वर्ग उच्च शिक्षा

ग्रहण करने विदेश जाने का जोखिम भी उठा लेता है किंतु यह बात चिंता का विषय तब बन जाती है जब वह युवा वर्ग बाहरी रंग ढंग में इतना घुल मिल जाता है कि अपनी मान-मर्यादा एवं संस्कृति को त्यागने में समय नहीं लगता | यहाँ तक कि वह अपने देश को भूल कर वहीं अपना जीवन व्यतीत करना अधिक लाभदायक एवं अच्छा समझता है | साथ ही साथ वहाँ की संस्कृति का अंगीकार भी वह बहुत तेज़ी से करता है | "पश्चिमी दुनिया विशेष कर अमेरिका सम्पन्नता के शिखर पर है | भौतिक उपलब्दियों के चर्म पर स्थिति उसकी चकाचौंध भारत की प्रतिभाशाली युवा पीढ़ी के लिए आकर्षण बन इस कदर केन्द्र बनी हुई है कि अवसर मिलते ही वह वहाँ बसेरा बनाने के लिए फ़िराक में उत्सुक रहती है |"[8]

सुषमा अग्रवाल साम्यभाव रखनेवाली और समय की तीर्व आहटों को पहचानने वाली लेखिका है | इसीलिए इन्होंने अपने उपन्यासों में उक्त समस्या पर चिंतन करते हुए युवा पीढ़ी की मानसिकता को समने लाने का प्रयास किया है तथा संस्कृति पर पड़ते उसके प्रभावों से भी समाज को अवगत करवाया है | **प्रतीक्षिता** उपन्यास में गौरव, लक्ष्मी और मनोहर का बेटा है | लक्ष्मी पढ़ी-लिखी है और मनोहर बैंक में काम करता है | दोनों पति-पत्नी अपने बेटे को अच्छी पढ़ाई के साथ-साथ अच्छे संस्कार भी देते है | दोनों जी तोड़ परिश्रम कर अपने बेटे को पढाते है और थोड़ी सी पढ़ाई करने पर की बेटा गौरव विदेश

जाने की ज़िद करने लगता है | "पापा, हमारे कॉलेज से अच्छे स्टूडेंट्स का सिलेक्शन होना है | उन्हें आगे पढ़ाई करने के लिए अमेरिका जाना है |"[9] यह बात दोनों को स्वीकार इसीलिए नहीं होती है क्योंकि उन दोनों का मात्र एक बेटा गौरव ही उनका सहारा था | इसी कारण उनके मस्तिष्क में यह बात हमेशा रहती है कि यदि हमारा बेटा विदेशा जाकर वहीं बस जाता है तो हमारे अंतिम समय में हमारा सहारा कौन बनेगा ? किंतु बेटे की हठ के सामने उनकी एक नहीं चलती और अतत: उन्हें न चाहते हुए भी अपनी सहमति देनी पड़ती है | अपनी सहमति के साथ-साथ लक्ष्मी और मनोहर अपने बेटे से यही बोलते है कि तुम केवल दो साल की पढ़ाई के लिए वहाँ जाना होगा | पढ़ाई समाप्त होने के उपरांत तुम्हें अपने देश वापिस अवश्य आना होगा | " कुछ क्षण पश्चात उसके पापा बोले, " बेटे, जितने भी युवा विदेश विदेश पढ़ने जाते हैं, उनमें से अधिकतर वहाँ की चकाचौंध व आराम देखकर वहाँ पर बस जाते हैं |"[10] गौरव भारतीय संस्कारों में पला बड़ा हा ई किंतु विदेश में जाकर अपने दोस्तों की संगत में आकर उसका रहन-सहन अर्थात सबकुछ पश्चिमीकरण से प्रभावित होने लगता है | जैसे क्लब जाना, शराब पीना आदि | जिसे वहाँ सामान्य सी बात माना जाती है | "जब गौरव के मेज़ पर वे गिलास आए तो उसने पीने से मना कर दिया | राजीव ने समझाया, " टेक इट, गौरव |"[11] वेदेश में भी गौरव की दोस्ती एक

भारतीय लड़के राजीव से ही होती है जो पूर्णरूप से पश्चिमी रंग-ढंग धारण कर चूका होता है तथा अपनी मान्यताओं एवं संस्कारों को भी त्याग कर उनको बहुत दूर छोड़ चुका था | वह विदेशी लड़की से प्रेम करता था और उसी से विवाह भी करना चाहता था जब गौरव उसके माता-पिता की सहमति के बारे में जानना चाहता है तो राजीव साफ शब्दों में कह देता है कि "यदि मैं चाहूँगा तो तैयार होना ही पड़ेगा | मैं समझता हूँ, घरवाले मेरी खुशी में ही अपनी ख़ुशी समझेंगे |"[12] दो साल की पढ़ाई समाप्त होते ही गौरव की वहाँ विभागाध्यक्ष के रूप में नियुक्ति हो जाती है और वहीं बसे एक भारतीय परिवार की बेटी के प्रेम में पड़कर उसी से विवाह करने की इच्छा करता है पर वह अपनी बात घरवालों से नहीं कह पता है और माता-पिता की सहमति लिए बिना ही गौरव रोमा से विवाह कर लेता है | सही अर्थों में देखा जाए तो उसने अपनी भारतीय संस्कृति (माता-पिता) का त्याग कर पश्चिमी संस्कृति (प्रोफेसर की बेटी रोमा) का अंगीकार कर लिया था | उसके उपरांत वह कुछ दिनों के लिए अपने माता-पिता से मिलने आता भी है किंतु जब उन्हें यह बात पता चलती है कि उनका बेटा पुनः विदेश जाना चाहता है तो वह कुछ नहीं कह पाते और बेटे को रोकने के बजाए कहते है कि " नहीं बेटे, मैं तुमसे क्यों नाराज़ होने लगा | तुम कोई अनहोनी बात तो कर नहीं रहे हो | ऐसा तो सदैव होता ही रहता है | यहाँ से जाने के पश्चात कितने नवयुवक वापस लौटकर आते हैं ?"[13]

वर्तमान की युवा पीढ़ी का यदि निरिक्षण किया जाए तो लेखिका का औपन्यासिक चिंतन प्रासंगिक बन पड़ा है | गौरव व उसके दोस्त आज के उन युवाओं में से है जो अपनी संस्कृति में दलते जा रहे है जहाँ मनुष्यता का नहीं अपितु पश्चिमी रंग में रंगता और पूंजीवाद को महत्व देता भारतीय समाज का बोलबाला रखता है | आज के युवा की यह प्रक्रिया जिसकी गति थमने का नाम नहीं ले रही है जो हमारी संस्कृति के लिए घातक है | जिसका स्पष्ट चित्रण सुषमा अग्रवाल ने अपने उपन्यास प्रतीक्षिता में किया है |

भारतीय संस्कृति सदियों से एक जुटता का उदहारण प्रस्तुत करती आई है | सदियों से हमारी यही प्रथा रही है कि लड़ाईयां लड़ते, आपस में राग द्वेष रखते हुए भी एक जुटता हमारी पहचान मानी जाती है | हमारे परिवारों में पीढियां दादा-दादी, माता-पिता, पोता- पोती, देवरानी-जेठानी सब एक दूसरे के साथ कंदे से कंदा मिलाकर एक ही परिवार में रहते थे और इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हमारे देश की ऐसी परम्परा का विश्वभर में गुनगान होता था किंतु कुछ दशकों से हमारी परम्पराएं लुप्त सी दृष्टिगोचर हो रही है अब परिवार निरंतर टूटते जा रहे है और वृद्ध जन निराश्रित होते जा रहे है | जिसके कारण भारत में वृद्धाश्रमों की संख्या बडती जा रही है | इस समस्या का कारण कहीं न कहीं पश्चिमीकरण से प्रभावित वह सोच है जिसने हमारी युवा पीढ़ी को एक दम बदलकर

रख दिया है | सुषमा अग्रवाल ने भारतीय संस्कृति की इस स्थिति का चित्रण करते हुए इसकी दशा एवं परिणामों को सामने लाया है | **कुल का चिराग** मूलतः स्त्री पर आधारित उपन्यास है अपितु अपने कथ्य के माध्यम से उन्होंने इस गम्भीर समस्या पर भी चिंतन किया है | उपन्यास में यमुना एक कामवाली बाई जो भावना के घर में काम करके अपना जीवन यापन करती है क्योंकि उसके सभी बेटे अपने-अपने परिवारों के साथ अलग रहते है और उनका छोटा बेटा जो अभी अविवाहित है यमुना बाई के साथ ही रहता है किंतु गलत संगत में पड़कर वह शराब पीता है और पैसे की कमी होने पर माँ की कमाई भी शराब पीने में ही उड़ा देता है | यदि यमुना पैसे देने से मना करती तो माँ की पिटाई भी करता है | इसी करण यमुना बाई वृद्धावस्था में भी दूसरों के घरों में काम करने के लिए विवश होती है | "चार बेटे तो ब्याह करके अपनी-अपनी बीवी को लेकर अलग हो गए | उन्हें तो कभी एक वक्त की रोटी देने से भी मतलब नहीं | अब रहा छोटा वाला, उसकी संगत ऐसी है कि रोज़ पीकर आ जावै है |"[14] देखा जाए तो यह स्थिति वर्तमान समय में इससे भी अधिक गंभीर रूप ले चुकी है अपने विकास के लिए नई पीढ़ी पश्चिमीकरण की चाल चल रही है जिसके परिणामस्वरूप जिस माता-पिता ने उनका पालन-पोषण कर इस स्थिति में पहुचाया होता है वही उन्हें निरंतर निराश करते जा रहे है और परिणामस्वरूप वृद्धों को संघर्ष भरा जीवन व्यतीत करना पड़ता है संपूर्ण भारत को इस समय अगर देखा जाए तो

यह समस्या अपने चर्मरूप पर दिखाई दे रही है लेखिका सुषमा अग्रवाल ने कुल का चिराग उपन्यास में इसका स्पष्ट और प्रभावित चित्रण किया है जो समसामयिक समय में प्रासंगिक व उचित जान पड़ता है | **अनोखा उपहार** उपन्यास की छोटी छोटी घटनाओं के माध्यम से भी लेखिका ने भारतीय संस्कृति का चित्रण प्रस्तुत किया है | प्रतिभा अनिल और उनका एक बेटा अमित सब एक परिवार में खुशी-खुशी रहते है | प्रतिभा भारतीय संस्कारों से परिपूर्ण व्यक्तित्व लिए हुए है किंतु अनिल अपना परिवार होते हुए भी विभाग की एक स्त्री सीमा के प्रति आकर्षित होता है अपनी पत्नी को अनिल मसूरी गुमाने ले जाने का कहकर सीमा को भी अपने साथ ले आता है किंतु प्रतिभा तब दंग रह जाती है जब अनिल सीमा को भी अपने ही कमरे में ठहराता है | "सीमा के हमारे साथ ही कमरे में ठहरने की बात सुनकर मैं ने विरोध किया परंतु अनिल ने यह कहकर अपनी बात आगे रखी कि वह बेचारी अकेली कैसे अलग कमरे में रहेगी |"[15] साथ ही बेटे के बीमार पड़जाने के उपरांत भी वह अपनी पत्नी और बेटे को कमरे में ही ठहरा कर तथा उनकी परवा किए बिना स्वयं सीमा के साथ घुमने निकल जाता है | " उनके चहरे से स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा था कि वे यही चाह रहे थे | तैयार होने के बाद वे दोनों घूमने के लिए निकल गए |"[16] और अंततः अनिल अपने परिवार को छोड़कर सीमा से दूसरा विवाह कर लेता है | वह सारी भारतीय परम्पराओं का उलंगन करते हुए पश्चिमीकरण की नीति को

अपनाता है और क्योंकि सीमा नौकरी पैशा थी इसीलिए अनिल का उसके साथ प्यार करना तंतु कहीं न कहीं इसे भी बंदा हुआ था | इस कथन का लेखिका ने पूर्ण रूपसे कहीं भी आंकलन नहीं किया है | अनिल का भरपूर परिवार होने के उपरांत भी दूसरी लड़की से प्रेम करना और पत्नी प्रतिभा को घर से निकाल कर सीमा से दूसरा विवाह करना भारतीय संस्कृति के विपरीत माना जाता है जो पश्चिमीकरण की देखा देखी में ही किया जा सकता है | वो पश्चिमीकरण और पूंजीवाद का प्रभाव ही है जिसके कारण अनिल इतना गिरा हुआ कार्य करने से तनिक भी नहीं घबराता | वर्तमान भारत की स्थिति का आंकलन किया जाए तो हम पाएंगे कि पश्चिमीकरण से हमारी युवा पीढ़ी पूर्णरूप से प्रभावित हो चुकी है जिसके कारण वह अपनी संस्कृति से निरंतर विमुख होते जा रहे है और पश्चिमीकरण का अंगीकार कर कोई भी अनुचित कार्य करने से नहीं चूकते | भारतीय संस्कृति के अनुसार जीवन व्यतीत करनेवाले भारतीय समाज की यह इस समय सबसे बड़ी समस्या बन चुकी है | संस्कृति के इन्ही बदलते आयामों को सुषमा अग्रवाल ने यथार्थ रूप में अपने उपन्यासों में सामने लाने का प्रयास किया है | **नया सवेरा** उपन्यास में लेखिका ने पश्चिमी रंग में डलता भारतीय समाज और पूंजीवाद के समाज पर पड़ते प्रभाव को सामने लाया है | लेखिका अपने विचार, संवेदना और संतुलित साहित्यिक दृष्टि से बहुआयामी बनकर सामने उभरी है इन्ही व्यक्तिगत संवेदनाओं एवं विचारों से एक साहित्यिक दृष्टि से बहुआयामी

बनकर सामने उभरी हैं इन्ही व्यक्तिगत संवेदनाओं एवं विचारों से एक साहित्यिक संतुलन उन्होंने दिखाया है | भारतवासियों को अपनी संस्कृति से अलगाने वाली पश्चिमी सभ्यता को लेखिका ने यथार्थ रूप में सामने लाया है |इस उपन्यास में गीतादेवी के चार पुत्र और एक पुत्री होती है वह जीवन भर जी तोड़ परिश्रम करके बच्चों को पढ़ाती-लिखाती है और सभी बच्चों का विवाह करवा कर गीतादेवी अपने दायित्वों से निवृत हो जाती है | "तीनों बेटे शिक्षित होकर अपनी-अपनी नौकरी में लग गए थे तथा बेटी नीरा भी अपने परिवार में प्रसन्न थी | एक-एक करके तीनों पुत्रों का विवाह भी उन्होंने कर दिया था |"[17] किंतु बच्चों से गीतादेवी को कभी सुख प्राप्त नहीं होता परिणामस्वरूप वह वृद्धाश्रम में रहना ही उचित समझती है | "गीतादेवी के कदम दीपू की माँ के साथ आश्रम की ओर बढ़ गए | मार्ग में एक-दो बार उन्हें ठोकर लगी तो दीपू की माँ ने उन्हें सहारा दिया | ये भी कैसा अजीब इतेफाक है कि एक वृद्ध दुसरे वृद्ध को सहारा दे रहा हो |"[18] वहीं दीपू की माँ जो वृद्धाश्रम में रहती है को यह सूचना मिलती है कि उसके पोते का विवाह हो गया है जिसका उसे ज्ञान तक नहीं था | आज भी ऐसी स्थिति हमारे समाज में विद्यमान है जहाँ वृद्धाश्रम में रह रहे वृद्धों को परिवार वाले भूल जाते है या यू कहे कि उन्हें मृत समझा जाता है | जिस परिवार की नीव दीपू की माँ खुद रखकर गई थी अब वृद्धावस्था में उसका परिवार ही नहीं माना जाता | "मुझे शादी में बुलाया तो बहुत दूर की बात है, मुझे तो सुचना तक भी

नहीं दी | क्या मुझे इस दुनिया से मरा हुआ ही समझ लिया | दादी के मन में पोते के विवाह का कैसा चाव होता है ?"[19] भारतीय युवावर्ग की यह परिस्थिति आज चारों और व्याप्त है जहाँ वह अपने माता-पिता को छोड़कर केवल आधुनिकता, विकास और पैसा कमाने आदि की दोड़ में लगे है | इसी कारण देखा जाए तो वर्तमान में वृद्धों की दिशा व दशा दोनों ही बिगड़ गई है | हमारे समाज में दिन-प्रतिदिन लगातार वृद्धाश्रमों की संख्या बडती ही जा रही है और अखंड भारतीय संस्कृति जो विश्व प्रसिद्ध कही जाती है अब केवल वृद्धाश्रमों या मंचों पर ही देखने को मिलती है | उपन्यास **नया सवेरा** में गीतादेवी को भारतीय संस्कृति के रूप में सामने लाया गया है और उसके तीनों बेटों सर्वेश, सुरेश,राजेश और बेटी निरा को उन युवाओं के रूप में सामने लाया है जो अतिअधिक तेज़ गति से भारतीय संस्कृति को त्याग कर पश्चिमी मूल्यों का अंगीकार कर रहे है |

लेखिका सुषमा अग्रवाल ने अपनी दार्शनिक दृष्टि से पश्चिमीकरण का आंकलन किया है | परिणामस्वरूप उन्होंने न केवल इसके नकारात्मक पहलुओं को सामने लाया है बल्कि इसके भारतीय संस्कृति पर पड़ते सकारात्मक रूप को भी सामने लाने का प्रयास किया है | लेखिका के साहित्यिक चिंतन की इस विशेषता को उनके उपन्यास **जागृति** में देखा जा सकता है | शिल्भ गाँव का पढ़ा-लिखा लड़का है जो अपने गाँव की परम्पराओं को परे छोड़ कर शहर की पढ़ी-लिखी लड़की उदिता से विवाह करता है | "मेरठ शहर की पढ़ी-लिखी खूबसूरत युवती इस घर की बहू बनकर आ रही है | आखिर उनके बेटे शलभ का प्रेम

विवाह जो है |"[20] शलभ ऐसा इसीलिए करता है क्योंकि वह एक पढ़ा-लिखा युवक है जो आधुनिकता की ओर बहुत अधिक आकर्षित है वहीं उदिता शिक्षित होते हुए भी गाँव में विकास की योजनाएं बनाकर उन्हें पूर्ण करने का संकल्प लेती है | " सर्वप्रथम गाँव की सफाई का लक्ष्य निर्धारित किया गया | इस संबंध में गाँव के सरपंच दीनदयाल जी व जागृति संस्था से जुड़े अन्य लोगों के साथ विचार विमर्श हुआ |"[21] गाँव के सभी लोग गाँव के पिछड़ेपन को समाप्त कर अपनी योजनाओं का प्रयोग करने का प्रयास करती है | गाँव के सभी पढ़े-लिखे लोग शहरों की ओर पलायन करना ही ठीक समझते है | देखा जाए तो यह समस्या आज भी देखने को मिलती है | ठीक इसी प्रकार लेखिका ने **जीवन पथ** उपन्यास में भी पश्चिमीकरण की सकारात्मकता को सामने लाया गया है जहाँ आराधना अपने माता पिता से विवाह करने की अपेक्षा आगे पढ़ाई की आज्ञा लेकर तथा समाज की मान्यताओं और परम्पराओं को तोड़कर विकास करना चाहती है वह अपनी इसी मानसिकता के चलते जी तोड़ परिश्रम करके पढ़-लिख कर अपनी एक अलग पहचान बनाने में सफल हो जाती है | " तभी अपने विचारों की अभिव्यक्ति करते हुए अध्यक्ष महोदय ने आराधना की ओर उन्मुख होते हुए कहा- "आप डायरेक्टर के पड़ पर सुशोभित होकर अपने कार्यों व विचारों से कॉलेज को लाभान्वित करें |"[22] आराधना की इस हठ के पीछे कही न कही पश्चिमी मानसिकता या पश्चिमी प्रभाव ही देखा जा सकता है | अत: कहा जा सकता है कि समसामायिक दृष्टि सम्पन्न सुषमा अग्रवाल ने अपने उपन्यास साहित्य में पश्चिमीकरण के भारतीय संस्कृति पर पड़ते प्रभावों का जो अंकन किया है वह प्रासंगिक जान पड़ता है |

<u>संदर्भ ग्रंथ :</u>

1. *डॉ.अमरनाथ, हिंदी आलोचना की परिभाषिक शब्दावली,राजकमल प्रकाशन, 2013, पृ. 260*

2. डॉ गुप्त,बजरंगलाल,विश्लेषण, विकल्प एवं सम्भावनाएँ, विकास का नया प्रतिमान (सुमंगलम),सुरुचि प्रकाशन,2014, पृ.53.
3. 'अग्रवाल सुषमा', 'प्रतीक्षिता', प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 2001, पृ. 31
4. अग्रवाल सुषमा', 'नया रास्ता', इंटर यूनिवर्सिटी प्रेस (प्रा.)लिमिटेड,दिल्ली, 2016,पृ.15.
5. वही, पृ. 47.
6. डॉ.अमरनाथ, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, 2009, पृ. 219.
7. राय,त्रिभुवन, संस्कृतिक टकरावों का स्मृत्याखान, अंक-3, पृ.42.
8. 'अग्रवाल सुषमा', 'प्रतीक्षिता', प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 2001, पृ. 45
9. वही, पृ.45
10. वही, पृ. 92
11. वही, पृ. 135
12. वही, पृ. 172
13. 'अग्रवाल सुषमा', 'कुल का चिराग', गीतिका प्रकाशन, बिजनौर 2014, पृ. 19
14. 'अग्रवाल सुषमा', 'अनोखा उपहार ', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर 2008, पृ. 48
15. वही, पृ. 50
16. 'अग्रवाल सुषमा', 'नया सवेरा', गीतिका प्रकाशन, बिजनौर 2016, पृ. 53
17. वही, पृ.84
18. वही, पृष.93
19. 'अग्रवाल सुषमा', 'जागृति', गीतिका प्रकाशन, बिजनौर, 2017, पृ. 11
20. वही, पृ. 72
21. 'अग्रवाल सुषमा', 'जीवन पथ ', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर 2019, पृ. 207